Dr. Guddy Kumari

History Deptt.

A.N.D. College, Patory (Samastipur)

B.A.(H) Part-I, History

LECTURE - 4.

✓✓मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age) एवं नवपाषाण काल(Neolithic Age) की विशेषताए.....

(प्रागैतिहासिक काल के दोनों PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें,

Lecture-3, Link-https://youtu.be/nZGSFx3Bv3g

Lecture-4, Link-https://youtu.be/W55yLW7j5Dg)

2. मध्य पाषाण काल (MESOLITHIC AGE)

मध्य पाषाण काल नुतनतम युग का आरंभिक चरण था। यह युग 10000 ईसा पूर्व से 5000 ईसा पूर्व तक चला। फ्रांस के मैगदली स्थल के पास माज दि एजिल नामक गुफा के खोज के उपरांत ही मध्य पाषाण काल को एक स्वतंत्र सांस्कृतिक चरण के रूप में मान्यता मिली।

इस संस्कृति को अजिलियन संस्कृति नाम दिया गया। मध्य पाषाण काल में अत्यंत नूतन युग(Pleistocene age) के अंत में हिमवती क्षेत्रों की वर्फ पिघली एवं समुद्र का स्तर बढ़ा। विशाल क्षेत्रों में जंगलों का अस्तित्व आ गया। जलवायु के परिवर्तित स्थिति से मानव व जानवरों के रहन–सहन में परिवर्तन हुआ। रोए वाले जानवरों की संख्या में कमी आई। अब मानव बड़े जानवरों के शिकार के स्थान पर मछली पकड़ने एवं पक्षियों के शिकार को प्राथमिकता देने लगा। अब उसे पूरा पाषाण कालीन बड़े हथियारों के स्थान पर सूक्ष्म पाषाण उपकरण बनाने हेतु बाध्य होना पड़ा। छोटे–छोटे पत्थरों के चमकदार उपकरणों के निर्माण के फ्लोटिंग तकनीक के द्वारा सूक्ष्मतम उपकरणों के निर्माण में क्रांतिकारी कार्य किया। तीर भाले एवं चाकू आदि को सूक्ष्म पाषाण से जोड़कर उपयोगी बनाया। तिकोने आयताकार एवं नवचंद्राकार बनाए गए। इन उपकरणों का आकार डेढ़ सेंटीमीटर से लेकर 3–4 सेंटीमीटर तक होता था।

✓ मध्य पाषाण कालीन मानव जीवन (Human Life During Mesolithic age):–

अब भारी जानवरों के स्थान पर मानव छोटे पशु हिरण खरगोश बारहसिंघा एवं पक्षियों के शिकार को प्राथमिकता देने लगा। अतः वह बड़े समूह में न रहकर छोटे–छोटे समूहों में विचरण करने लगा। आखेट एवं खाद संग्रह अब

भी उसकी आजीविका का मुख्य साधन था। विद्वानों का मानना है कि मानव शिकार करने में कुत्ते का सहयोग लेने लगा। अतः कुत्ते को मानव का सर्वप्राचीन पशु मित्र माना गया है। मध्य पाषाण काल में मानव द्वारा निर्मित कलाकृतियों का तुलनात्मक रूप से अभाव दृष्टिगोचर होता है। संभवत छोटे–छोटे जानवरों के शिकार मछली पकड़ने एवं पक्षियों के शिकार में मानव अत्यंत व्यस्त हो गया इसीलिए इसे कलाकृतियों के निर्माण हेतु खाली समय नहीं मिल पाया। पहले वह भारी–भरकम जानवरों का शिकार कर कुछ समय आराम करता था और कलाकृतियों निर्मित करता था। मध्य पाषाण काल में अनुकूल जलवायु के कारण मानव जीवन सुविधाजनक हो गया।

भारत में मध्य पाषाण काल के बारे में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ईस्वी में हुई, जब सीएल कार्लाइल महोदय ने से लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले। इस काल में मानव अधिक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र में फैला व जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। इस काल के हथियारों में टेढ़े–मेढ़े ब्लेड स्क्रैपर ब्यूरिन बेधक एवं चंद्रिका प्रमुख है। मध्यप्रदेश में कैमूर की पहाड़ी व भीमबेटका से कुछ मध्य पाषाण युगीन शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। अंतिम चरण में मध्य पाषाण युगीन मानव मांस को चूल्हे पर पकाना, घास को सिलवट पर पीसना जान गया था। परिवार जैसे प्रथा के संकेत मिलने लगे थे।

3. नवपाषाण काल (NEOLITHIC AGE)

नवपाषाण काल का आरंभ विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग समय पर हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में 7000 ईसा पूर्व से लेकर 4000 साल पूर्व तक नवपाषाण काल का आरंभ माना जाता है। नवपाषाण काल की सर्व प्रमुख विशेषता थी मानव का आखेट से कृषि की ओर उन्मुख होना। विल दुरंत ने इसे एक क्रांति की संज्ञा देते हुए कहा है कि एक प्रकार से समस्त मानव इतिहास क्रांतियों से बंधा हुआ है। नवपाषाण काल में आखेट से कृषि में पदार्पण एवं आधुनिक युग में कृषि से उद्योग में पदार्पण। इन दोनों क्रांतियों के अलावा और किसी क्रांति ने मानव इतिहास पर मूलभूत वास्तविक प्रभाव नहीं छोड़ा।

नवपाषाण काल मानवीय इतिहास का वह महत्वपूर्ण काल था जिसमें के मानव ने अपने दैनिक आवश्यकता की पूर्ति के साधनों की खोज की अथवा अविष्कार किया। यह एक साथ मानवीय इतिहास की कई विशेषताओं का काल था जिनमें से कुछ अधोलिखित है:–

✓ आखेट से कृषि की ओर पदार्पण :– नवपाषाण युग में आखेट से कृषि की ओर पदार्पण मानव जीवन की सर्वप्रथम सर्व महत्वपूर्ण एवं सर्वोपयोगी क्रांति थी। इस क्रांति ने मानव इतिहास को एक नवीन आयाम दिया। संभवत किसी फसल या फल के कुछ बीज कहीं गिर गए होंगे जब उनसे पौधा बनकर और कुछ अत्यधिक फसल या फल उत्पन्न हुए तब मानव ने इस दिशा में प्रयास कर कृषि कर्म का ज्ञान प्राप्त किया होगा। कृषि कार्य के प्राचीनतम प्रमाण पश्चिम एशिया में इराक के जार्मी जेरिको एवं सियाल्क एवं मिस्र में फ्यूम, बद्री एवं नासा आदि स्थलों से मिले हैं। विद्वानों का मानना है कि लगभग 8000 ईसा पूर्व कृषि का विस्तार दक्षिण पश्चिम एशिया से आरंभ होकर 6000 ई पू दक्षिण पूर्वी यूरोप तक पहुंचा और फिर समस्त यूरोप में फैल गया। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर पता चलता है कि नव पाषाण युगीन मानव गेहूं मक्का जौ जई मटर मसूर आदि का उत्पादन करने लगे थे। सेब सहित पतले छिलके वाले एवं कुछ कड़े छिलके वाले फलों को भी वो उपजाते थे। नवपाषाण युग के एक

गुफा चित्र में एक मानव को दो बैलों की सहायता से हल चलाते हुए चित्रित किया गया है। इससे पता चलता है कि वह हल से खेत जोतना जान गए होंगे। संभवत पेड़ के तने में भारी व नुकिला पत्थर बांधकर उसे हल के रूप में प्रयोग करते होंगे।

✓पशुपालन का आरंभ:– पशुपालन के निश्चित प्रमाण हमें नवपाषाण काल से ही मिलते हैं। पशुओं को पालतू बनाने के सर्वप्राचीन एवं प्रारंभिक साक्ष्य ग्रिक के अरगिसा मगुला नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं। विद्वानों का मानना है कि कुत्ता सबसे पहला पालतू जानवर था। जिसकी हडिया 8000 ईसा पूर्व की है। लगभग 6000 ई.पूर्व. बकरी गाय एवं बैल को पालतू बनाया गया। घोड़ा सबसे बाद में पालतू बनाया गया एवं कालांतर में उस से सैकड़ों कार्य लेकर मानव ने आराम, शक्ति और संपत्ति प्राप्त की। संभवत अब मानव ने गाय के दूध का भी खाद्य पदार्थ के रूप में इस्तेमाल किया। दूध के साथ साथ इन जानवरों से खाल वह तंबू तथा शस्त्र व कवच के लिए चमड़ा प्राप्त करने लगा। संभवत पालतू जानवरों का प्रयोग परिवहन एवं जुताई में भी होने लगा था।

✓ आवास एवं वस्त्रों का निर्माण:– गृह निर्माण कला के ज्ञान के आरंभिक साक्ष्य हमें नवपाषाण युग से ही मिलते हैं। कृषि कार्य ने मानव को अस्थाई रूप से एक स्थान पर घर बनाकर रहने को बाध्य किया होगा। नव पाषाण काल के मकानों में स्विट्जरलैंड में झिलों पर बनाए गए मकानों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यह लकड़ी के लट्ठों को झील के पानी में गाड़ कर बनाए जाते थे। आने जाने के लिए सीढ़ियां होती थीं। वे लोग दो लठठों को लकड़ी की किलो का उपयोग कर जोड़ना जानते थे। कई स्थलों से जो आवास हेतु बनी झोपड़ी के साक्ष्य मिले हैं, उनसे पता चलता है की झोपड़ी के बर्तन मिट्टी के होते थे। दीवारें सरपट की चटाई की बनी होती थी। जिन पर मिट्टी लिपि जाती थी। छतों को घास–फूस, पेड़ की छाल से ढका जाता था। पहियों द्वारा सामग्री लाई ले जाई जाती थी।

नवपाषाण काल में मानव ने पत्थर की सूईयों से जानवरों की खाल को सिलकर वस्त्र बनाना आरंभ कर दिया था। संभवत इसी खाल से मानव ने भेंड़ के उन एवं पेड़ों के रेशे बुनकर अपने पहनने हेतु वस्त्र बनाना आरंभ कर दिया था। प्राचीन अवशेषों में पत्थर के तकुए का मिलना वस्त्र उद्योग की प्रगति की ओर संकेत करता है। पेड़ पौधों के रस द्वारा वस्त्रों को रंगना व चित्रित करना भी आरंभ हो गया था।

✓ सामाजिक व्यवस्था का आरंभ:– आरंभिक सामाजिक व्यवस्था के अस्थाई प्रमाण हमें नवपाषाण काल से ही मिलते हैं। रोटी कपड़ा और मकान की प्राप्ति में सामाजिक व्यवस्था को स्थाई आयाम दिया। संभवत स्त्री पुरुषों के बीच इसी काल में श्रम विभाजन हो गया। इस काल में खेती कार्य, आटा पीसने का कार्य कपड़ा एवं बर्तन निर्माण का कार्य संभवत स्त्रियां किया करती थी पुरुष कृषि कार्य में स्त्रियों की सहायता के साथ–साथ पशुपालन व आखेट करते थे। संभवत सामाजिक संगठन के ईकाई कबीला अस्तित्व में आ गई थी। प्रत्येक कबीला का अपना एक टोटम (कुल चिन्ह) होता था। इसके सदस्य अपने टोटम से कृपा बनाए रखने हेतु प्रार्थना करते थे।

✓ मिट्टी के बर्तनों का निर्माण:– संभवत मानव ने देखा होगा कि आग के पास की मिट्टी सुख कर कड़ी बन जाती है या फिर कभी मिट्टी से लिपी कोई डलिया नुमा चटाई आग में जल गई होगी इससे मिट्टी पककर बर्तन के आकार में आ गई होगी। इस प्रकार मानव को ज्ञात हुआ होगा की मिट्टी को आग पर पकाकर बर्तन बनाया जा सकता है। इस प्रकार गीली मिट्टी को विभिन्न रूप देकर आग पर पकाकर विभिन्न प्रकार के हाथ के बर्तन बनाना

मानव ने आरंभ कर दिया। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसी काल में पहियों का आविष्कार हो चुका था एवं मनुष्य ने पहिया का प्रयोग मिट्टी के बर्तन बनाने में किया। इस प्रकार कुम्हार के चाक ने मिट्टी के बर्तन बनाने की कला को शिल्पी का रूप दिया। मगर विल डूरेंट का मानना है कि नवपाषाण काल के मनुष्य को कुम्हार के चक्के का ज्ञान नहीं था। यदि कुम्हार के चाक का ज्ञान न भी हो तो भी हाथ से मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक का ज्ञान निश्चित रूप से नवपाषाण काल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

✓ महा पाषाणों की प्राप्ति:–यह बड़े–बड़े स्मारक पत्थर के थे जो कब्र पर रखे जाते थे। यह मृतकों के स्मृति चिन्हों के रूप में प्रयुक्त होते थे। नवपाषाण कालीन ऐसे महापाषाण वाले कब्रगाह पश्चिमी यूरोप व दक्षिणी भारत में प्राप्त हुए हैं।

✓ हथियार एवं उपकरण :– नवपाषाण कालीन हथियार व उपकरण में ढेकली कुल्हाड़ी फावड़ा, छेनी हाशिया, आरी मछली पकड़ने के कांटे एवं पहिया प्रमुख है। झील व नदी पार करने के लिए नाव नूमा लकड़ी का आविष्कार कर लिया गया था। सूत काटने हेतु तकली का व बुनने के लिए संभवत करघे का भी अविष्कार कर लिया गया था।

✓ धार्मिक अभिरुचि:– संभवत नवपाषाण कालीन मानव के धार्मिक अभिरुचि जागृत हो चुकी थी। मिस्र, सीरिया एवं दक्षिणी पूर्वी यूरोप से इस काल की मिट्टी वह अस्थियों से निर्मित कुछ नारी मूर्तियां प्राप्त हुई है। यह मातृशक्ति में आस्था का संकेत देती है। मृतकों के साथ ये उसकी उपयोग में लाई गई वस्तु तथा खाद्य सामग्री सहित दफनाते थे। कबीले के लोग टोटम पर आस्था रखते थे। इस काल का सर्वप्रसिद्ध महापाषाण 'स्टोनहैंज' इंग्लैंड के सेल्सबड़ी मैदान क्षेत्र से मिला है। संभवत ये सूर्य पूजा में भी आस्था रखते थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नवपाषाण काल में मानव ने कई क्रांतिकारी अविष्कार किए। नवपाषाण कालीन इस क्रांति का आरंभ पश्चिम एवं दक्षिण पूर्वी एशिया से हुआ एवं कालांतर में यह पूर्व और पश्चिमी देशों की ओर प्रसारित हुआ। नवपाषाण कालीन उक्त वर्णित क्रांतिकारी विशेषताओं ने ही कालांतर में मेसोपोटामिया, मिश्र, चीन तथा भारत की आरंभिक सभ्यताओं के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।।

!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!धन्यवाद।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।